साक्षात्कार कर्मयोग एवं भक्तियोग का व्यावहारिक स्वरूप

यह परिचर्चा महर्षि युनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट, अयोवा सिटी संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित हुई थी। दिनांक 31 जुलाई से 3 अगस्त तक WAVES 2014 के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में World Hindu News के मुख्य सम्पादक श्री राहुल चन्द्रा के साथ सम्पन्न साक्षात्कार का मौलिक प्रकाशन इसका जीवन्त प्रसारण Youtube/Google पर 'World Hindu News - Professor Ram Sewak Dubey देखा जा सकता है।

राहुल चन्द्रा- नमस्ते

डॉ0 रामसेवक दुबे - नमस्कार (दर्शकों को सम्बोधित करते हुए)

राहुल चन्द्रा- आज हमारे सामने रामसेवक दुबे जी हैं। विश्व हिन्दू समाचार के HINDU TALK SHOW में। प्रो0 रामसेवक दुबे जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में प्रोफेसर हैं और इनका एक जो रूचि का क्षेत्र है वो वेदान्त और श्रीमद्भगवत्गीता है। रामसेवक दुबे जी आपका बहुत–बहुत स्वागत है। ये हमारा Privvibage है कि आप HINDU TALK SHOW में विश्व हिन्दू समाचार में आये हैं MAHARSHT UNIVERSITY के WAVES 2014 में और आप यहाँ पर पधारे।

डॉ0 रामसेवक दुबे - आपने इस कार्यक्रम में मुझे अआमन्वित किया इसके लिए हम बड़े आभारी हैं और आपको बहुत सारा धन्यवाद देते हैं।

राहुल चन्द्रा- आपने जैसे बताया कि श्रीमद्भगवद्गीता आपने तो उसमें जैसे भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं। आज का विषय में समाज में हमारा बहुत बड़ा जो वर्ग है हिन्दू समाज में वो ये विश्वास करता है कि उसको प्रश्न रहता है कि कर्मयोग और भक्तियोग में क्या DIFFRENCES है और कहाँ पर कर्मयोग सही है। कहाँ पर भक्तियोग है। या पूरा भक्त्यिोग करने से ही मोक्ष मिल जाता है। और कर्मयोग में क्या–क्या चीजे कर सकते हैं।

और अगर समाज में समाज को चुनौती मिलती है कई बाहरी शक्ति से या आन्तरिक PROBLEM से तो उसमें कौन सा योग प्रधान हैं। इस पर आपसे आज हम वार्ता करना चाहेंगे और साथ ही साथ कि हिन्दू

समाज में जो युवा वर्ग है वो हिन्दू संगठनों में काफी उनकी जो मात्रा है वो काफी कम देखी जाती है और काफी सारा समाज का वर्ग जो है वो आज की आधुनिक जिन्दगी में काफी ज्यादा व्यस्त रहता है और सामाजिक संगठनों में समय निकालने में उसके पास काफी सारे उदाहरण रहते है जैसे कि परिवार में ही वो काफी व्यस्त हैं। या उसके भाव उसकी सोच को कैसे आगे बढ़ायी जा सके जिससे कि एक संगठित हिन्दू परिवार आगे आये और धर्म, वेदशास्त्र, TREDITION, CULTURE इनके बारे में साथ में वो काम करें।

डॉ0 रामसेवक दुबे - बहुत ही अच्छा प्रश्न आपने किया और मैं समझता हूँ कि एक प्रश्न में आपने बहुत सारे प्रश्नों को समेट लिया है।

सबसे पहले आपने यह कहा कि भक्तियोग और कर्मयोग में क्या अन्तर है दोनों में कौन सा प्रधान है। इस विषय में जहाँ तक मै समझता हूँ कि इन दोनों में एक CHOTCE करना संभव नही है। क्योंकि अगर कोई कर्मयोग को छोड़कर केवल भक्तियोग की CHOICE करे तो फिर वह अपने, अपने समाज के लिए, अपने परिवार के लिए, अपने देश के लिए कुछ नहीं करेगा। केवल लगातार उसे भक्ति ही करते रहना पड़ेगा, जो कि संभव नही है। केवल भक्ति से क्या करेगा वो कितनी देर उसका चित्त एकाग्र होगा क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने तो चित्त एकाग्र करने के लिए ही बहुत सारे उपाय बताये। इसका तात्पर्य ये होता है कि किसी भी व्यक्ति का चित्त बहुत देर तक एकाग्र नहीं होता और जब चित्त एकाग्र नहीं होता, तो बड़ी स्पष्ट सी बात है कि वह भक्ति में भी बहुत देर तक एकाग्र नही होगा। जब भक्ति में एकाग्र नही होगा तो भक्ति के नाम पर उसके मन में बहुत सारे प्रमाद उठेगे, जो कि भक्ति अथवा भक्तियोग से अलग बात होगी। उसको भक्त्यिोग नही कहा जा सकता। भगवान् श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में जिन दो योगों की प्रमुखता से चर्चा की वह ज्ञानयोग और कर्मयोग है। श्रीमद्भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में उन्होने कहा कि–

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा, पुरा प्रोक्ता मयानघ

ज्ञानयोगेन साङ्ष्यानांकर्मयोगेन योगिनाम्–3/3

अर्जुन से कहा कि है अर्जुन इस संसार में मैने दो तरह के योगों का उपदेश किया है। जो ज्ञानीलोग हैं, जो संन्यासी हैं, जो साधना की ऊचाँई पर आरूढ़ हैं उनके लिए तो सांख्य–योग कहा, और जो गृहस्थ है, जो अभी ज्ञान की उस पराकाष्ठा पर नही पहुँचे है, जो साधना का आरम्भ कर रहें हैं। उनके लिए कर्मयोग है। तो इन दोनो में से उन्होंने अर्जुन को कहा कि तुम कर्मयोग के अधिकारी हो, इस बात को बड़ा स्पष्ट करके उन्होंने कहा कि – **'कर्मण्येवाधिकारस्ते'** तुम्हारा अधिकार केवल कर्म में ही है, ज्ञानयोग में तुम्हारा अधिकार नही है। क्योंकि अगर ज्ञानयोग में अधिकार होता तो क्यो कहते **'कर्मण्येवतेऽधिकारः वर्तते'** तुम्हारा अधिकार केवल कर्मयोग में है। अर्थात् अभी अर्जुन ज्ञान की सरधना की उस ऊचाँई पर नही पहुँचा है जिस पर पहुँच करके सांख्ययोग की

साधना करना संभव होता है। वस्तुतः सांख्ययोंग उसे कहते हैं जिसमें कि आत्मा और शरीर का पृथक् अनुभव किये जाय सांख्ययोग का तात्पर्य मैं स्पष्ट कर दूँ कि सांख्ययोग वह सिद्धान्त है जिसमें आत्मा अन्य है, और शरीर अन्य है इसका विवेचन किया जाता है। कितने ऐसे लोग हैं जिसको इस बात का बोध है कि आत्मा अन्य है, और शरीर अन्य है। हम तो शरीर को ही आत्मा मानें बैठे हुए हैं। क्योंकि हमारे शरीर को पीड़ा होती है तो हम कहते हैं कि आज आत्मा बड़ी दुःखी है। इसका तात्पर्य यही हुआ कि अभी सामान्य व्यक्ति को शरीर में और आत्मा में कोई भेद प्रतीत नही हो रहा हैं। इसलिए जब तक उसे आत्मा और शरीर में भेद की प्रतीतिन हो, भेद की अनुभूतिन हो , जब तक शरीर अलग क्या वस्तु है, आत्मा अलग क्या वस्तु है। इन दोनों का अलग– अलग उसे ज्ञान न हो तब तक उसको सांख्ययोग कहाँ से समझ में आयेगा। इसीलिए भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि **'कर्मण्येव ते अधिकारः न ज्ञानयोगे'** तुम्हारा अधिकार कर्मयोग में है ज्ञानयोग में नही। ज्ञानयोगी तो वे लोग है जो कि साधना की ऊँचाई पर पहुँच चुके हैं। जिन्हें शरीर अन्य है आत्मा अन्य है इस बात का बोध हो चुका है। जिन्हें इस जगत् के मिथ्यात्व का बोध हो चुका है, जिन्हे यह शरीर अब मिथ्या प्रतीत होने लगा है, जिनकी दृष्टि में भोग व्यर्थ हैं, जिन्होंने ज्ञान को ही मुख्य मान लिया है, संसार के भोगों को जिन्होंने छोड़ने का अभ्यास किया और अब छोड़ करके सफलतापूर्वक योग में अपना मन लगा कि वे तो सांख्ययोंग के पात्र हैं। लेकिन अर्जुन अभी तो साधक है इसलिए यदा कदा भगवान् भगवद्गीता में अर्जुन को कहते है धनंजय! धनजंय का आशय यही होता है कि जो धन को जीतने की इच्छावाला हो। कभी–कभी उसको कहते है पार्थ। अर्थात् तुम कुन्ती के पुत्र हो, अभी तुम्हें ज्ञानी के रूप में नही कहा जा सकता। अभी तुम किसी एक माँ के सामान्य पुत्र हो जिसकों कर्मयोग करने का ही अवसर मिला हुआ है। तो मुख्यरूप से भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग का ही उपदेश दिया है क्योंकि वह ज्ञानयोग का पात्र नही है। और यदि अर्जुन ज्ञानयोग का पात्र नहीं है, तो समाज के इस सामान्य मानस युद्ध में और कौन ज्ञान का पात्र है। सामान्यतः गृहस्थ कर्म के ही पात्र हैं, कर्मयोग के ही पात्र हैं और उस कर्मयोग की साधना में भक्ति बड़ी उपयोगी है। भक्तियोग के बिना कर्मयोग कभी–कभी नीरस हो जाता है। लगातार हम कर्मो को करते चले तो मन में कदाचित उदासीनता उत्पन्न हो जाती है। नीरसता उपलब्ध हो जाती है तो फिर इसके लिए विद्वानों ने कहा कि भगवद्गीता का जो भक्ति है वह कर्मयोग को बड़ी कुशलता पूर्वक किये जाने के लिए सहयोगी है इसीलिए भगवान् कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि कर्म करे और मेरा स्मरण करो–**'मामनुस्मरयुद्धयच'** मेरा स्मरण करो और युद्ध करो। ऐसा प्रतीत होता है कि केवल कर्मयोग को पूरा नही माना उन्होने, केवल भक्तियोग को पूरा नही माना बल्कि दोनों के सामजंस्य को उन्होंने उपदिष्ट किया। तो आपने जो पूछा कि युवा के लिए क्या करणीय है तो उसे भगवान् में आस्था रखते हुए कर्म करना चाहिए यह गीता का उपदेश है क्योंकि गीता कर्मो को छोड़ने के लिए कभी नही कहती। यही तो अर्जुन को समझाया–**''कर्मण्येवाधिकारस्ते**

मा फलेषु कदाचन।''कहाकि फल में तुम्हारा अधिकार नही है तुम कर्म करो फल तो पाओगे ही अगर बड़ी ईमानदारी और निष्ठा से कर्म कर रहे हो तो, कर्मफल का यही सिद्धान्त है कि जो भी कर्म किया जायेगा उसका फल अवश्य मिलेगा। कर्म निष्फल नहीं होता इसलिए फल की इच्छा करना, इच्छा न करना दोनों बेकार हैं। आप जिस दृष्टि से कर्मों में लगे हुए हैं उसका फल तो आपको मिलना ही है। क्योंकि फल कर्म का होता है फल इच्छा का नहीं होता, तो ऐसी दृष्टि से प्रत्येक युवक का यह दायित्व है प्रत्येक युवक का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने विहित कर्म में लगे। जिसका जो भी विहित कर्म है। जो भी विद्याध्ययन में लगा हुआ है, विद्यार्थी है वह विद्याध्ययन में लगे और भगवान् का भी स्मरण करे । ये नहीं है कि अपना सारा पाठ्यक्रम छोड़कर भगवान् का ही स्मरण करें और परीक्षा में उसे बड़े अच्छे अंक मिल जायेंगे अगर ऐसा नहीं हुआ तो यह कह सकता है कि भगवान कुछ नही है, क्योंकि हमने तो केवल भगवान् का भजन किया परन्तु फेल हो गया । इसलिए केवल भक्ति से भी काम नही बनेगा और कर्मयोग का परित्याग करना भगवद्गीता का कथन ही नही है उन्होंने कहा कि – **''मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते सडोऽस्त्वकर्मणि''** अर्थात् तुम्हारी आसक्ति तुम्हारा रूझान कर्म छोड़ने में नही होना चाहिये। इसलिए भी कर्म करना है क्योंकि तुम कर्म छोड़ नही ाकते। कर्म तो करोगे ही गीता में अनेक बार अनेक श्लोकों से समझाया गया कि कोई भी प्राणी, कोई भी मनुष्य , कोई भी जीव जो भी शरीर धारी है वह कर्म को छोड़ नहीं सकता–

'नहिदेहभृताशक्यंव्यक्तुम्कर्मायरोषतः' जिसने देह धारण कर लिया वह भला कैसे छोड़ेगा। किन्तु देह से देर सारे कर्म स्वाभाविक रूप से होते रहते है, हम श्वास लेते रहते हैं, पलक मारते रहते हैं, सोना हमारा कर्म है, जागते रहते हैं नित्य क्रियाओं में लगे रहते हैं, तो कर्मों को कहाँ से छोड़ सकते हैं। क्योंकि कर्म के बिना शरीर का निर्वाह संभव ही नहीं होता। शरीर तो कर्म करने के लिए ही बना हुआ है। अन्यथा सूक्ष्म शरीर से काम चल सकता था। भगवान् ने इतने हिष्ट–पुष्ट शरीर लोगों को दिये तो इसलिए दिये कि वह कर्मयोग को करें। और कर्मयोग के साथ–साथ परमसत्ता में, परमात्मा में जिसका जो भी अभीष्ठ देवता हो उसमें वह अपनी आस्था रखे रहे इससे उसको कर्मयेग करने में एक बड़ा संबल मिलेगा। इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा–

'मन्मना भव मद्भक्तो यद्याजी मां नमस्कुरू' मेरे में मन लगाओ, मुझमें मनन करो, मेरे प्रति अपनी भक्ति की धारणा रखो, लेकिन ये कहीं नहीं कहा कि केवल इतना ही करो कर्म का त्याग कर दो। अगर ऐसा भगवान् को अभीष्ट होता तो वह अर्जुन को युद्ध से विरत कर देते और कहते कि तुम केवल भक्ति करो, और केवल मेरा जप करो, युद्ध मत करो और इससे तुम युद्ध में विजयी हो जाओंगे। लेकिन ऐसा उन्होंने नही कहा, इसलिए प्रत्येक युवक का, प्रत्येक योद्धा का प्रत्येक मनुष्य का जो भी गृहस्थ जीवन में है जो भी किसी विशेष कार्य में नियुक्त है और नियुक्त होने की कामना से अपनी तैयारियाँ कर रहा है उसे कर्मयोग में लगे रहना चाहिये। ये

भगवद्गीता का परमसिद्धान्त है इसके साथ–साथ वह भक्तियोग मन में रखे क्योंकि भक्ति से उसे एक बड़ा संबल मिलता है। उससे हम अपने मन में बार–बर थोड़ा सा बदलाव लाकर के फिर नये जोश के साथ कर्म करते हैं। भक्ति भी कर्मयोग को संबल प्रदान करती हैं। ऐसा नही है कि केवल हमें भक्ति से ही सारे लक्ष्यों की प्राप्ति हो जायेगी । क्योंकि हमारे किसी भी शास्त्र के द्वारा ऐसा नहीं कहा गया।

ईशावास्योपनिषद् के द्वितीय मन्त्र में इसी बात को कहा कि–**'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेतष्छतसमाः'**कर्मो को करते रहते हुए ही व्यक्ति को सौ वर्ष जीने की इच्छा करना चाहिए। कर्मो को न करते हुए वह क्या जियेगा। अगर वह कर्म नही कर रहा है तो उसे जीवित रहने का हक नहीं है। वह जीवित है भी नही, क्योंकि कर्म नही कर रहा है तो कर क्या रहा है कैसे वह इस बात को सिद्ध करेगा कि वह जीवित है जीवित रहने के लिए उसे कर्म में लगा रहना चहिए। तो आपने ढेर सारे ऐसे प्रश्न किये जिसका उत्तर हमारे इस वक्तव्य में समाहित हैं।

भगवद्गीता का यही परमउद्घोष है कि प्रत्येक युवक को कर्म करना चहिए, प्रत्येक गृहस्थ को कर्म करना चाहिए। भगवद्गीता गृहस्थों के लिये है क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण गृहस्थ के रूप में उपदेशक है और अर्जुन गृहस्थ के रूप में श्रोता हैं और प्रत्येक गृहस्थ के लिए कर्मयोग की साधना के लिए भगवान् का उपदेश है इसलिए भगवद्गीता प्रत्येक हिन्दू के लिए और प्रत्येक मनुष्य के लिए उपदिष्ट की गयी है।

आप यह कह सकते है कि ये मनुष्य के लिए ही क्यों? इसका बड़ा सुस्पष्ट उदाहरण स्वयं भगवान् ने दिया अर्जुन को समझाते हुए कर्मयोग और सांख्ययोग में उसे जब थोड़ी कठिनाई का अनुभव हुआ तो उन्होंने कहा कि देखो यह शरीर तो मिथ्या है–**'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय'** जैसे कोई व्यक्ति जीर्ण वस्त्रों को छोड़करके नये वस्त्र को धारण करता है। उसी तरह से यह शरीर भी जब कर्मयोग के लिए उपयोगी नही रह जाता जब इसे छोड़कर हम दूारे शरीर को धारण करने की कामना करते हैं। तो वस्त्र बदलने का दृष्टान्त उन्होंने दिया। यह केवल मनुष्यों पर ही लागू होता है। मनुष्य के अलावा और कोई भी जीव–जन्तु और कोई अन्य पशु–पक्षी यह सब वस्त्र धारण नहीं करते। इसलिए ये सब समग्र गीता का उपदेश उन लोगो के लिए है जो वस्त्र धारण करते हैं, जो मनुष्य हैं जो कर्मयोग में अपनी रूचि रखते हैं। और इस कर्मयोग के साथ–साथ विवेक बड़ी आवश्यकता है। बिना विवेक के कर्मयोग नही हो सकता। जैसे कोई यह व्यक्ति कहे कि सदा सत्य बोलो और सदा सत्य बोलने के साथ–साथ उसे कभी लोभ के आ जानेपर थोड़ी देर झूठ बोलने का मन कह जाय तो फिर यह मर्यादा नही है। ये कर्तव्य नही है, ये कर्मयोग का अनुपालनन नही है। कर्मयोग के अनुपालन में शास्त्रों के द्वारा विहित जो मार्ग है उन्ही मार्गो पर चल्न करके बहुत ही निष्ठा से, बहुत ही ईमानदारी से कर्मयोग किया जाता है। कर्मयोग आराम का कोई साधन नहीं है। और यह भी नही है कि कर्मयोग कोई व्यवसाय है कि आप कर्मयोग में लग गये हो तो आपको जरूर सफलता मिल जायेगी। आपको ऐसा लगने लगेगा कि अब मै कर्मयोग

में लगा हूँ तो मुझे अब सफलता अवश्य मिलेगी। हाँ मिलेगी अवश्य, परन्तु अब ऐसा नही है कि आप सफलता और असफलता के द्वारा कर्मयोग का परीक्षण करे, क्योंकि इसीलिए तो भगवान् ने कहा कि कर्मफल में आसक्ति मत रखो, क्योंकि कर्मेफल में जब आसक्ति हो जायेगी तो आप परीक्षण करने लगेंगे कि फल मिला तो कर्मयोग हमारा सफल है। फल नही मिला तो कर्मयोग असफल है। इसलिए उन्होंने फल की प्राप्ति पर फल के प्रति आसक्ति पर जोर नही दिया।

राहुल चन्द्रा- प्रोफसर डुबे जी इसमें आजकल हमारे हिन्दू समाज में जो धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक संगठन है जो हिन्दू समाज के उद्धार करने में लगे है और अमेरिका यूरोप भारत और अलग–अलग जगहोपर हमने देखा है जो हिन्दू समाज एक धार्मिक और राजनीतिक संगठन है उनमें जो युवा वर्ग है हिन्दू समाज का । उनको ये रहता है कि हमारे पास समय नही है हम गृहस्थी में व्यस्त है। और जो ब्रह्मचर्य में है वह अपनी शिक्षा में व्यस्त है और जो काफी सारे जो लोग हैं संगठनों में वह काफी सीनियर है वानप्रस्थ जीवन में है और वो उसमें करते है बल्कि हमने धर्मो में देखा है कि युवा वर्ग जो है जैसे ईसाईयों में हुआ, मुसलमानों में हुआ, उनमें युवा वर्ग काफी ACITVE(एक्टिव) रहता है सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक संगठनों में तो इसमें आपकी क्या टिप्पणी है।

डॉ0 रामसेवक दुबे - देखिए इस विषय में मुझे बहुत अधिक नही कहना है लेकिन हमारा जो धर्म है जिसे आप हिन्दू धर्म के नाम से कहते है। जो शास्त्रों के द्वारा सनातन धर्म कहा जाता है। वह बड़ा उदार है। उसमें सामजंस्य बना करके चलने के लिए कहा जाता है समन्वय बना करके सारे कार्यों से आप समन्वय बनाये, धर्म के अनुपालन में अगर आप गृहस्थ जावन के दायित्वों को कही से बाधित करते है। तो फिर वह धर्म का अनुपालन नही होगा, क्योंकि धर्म के अनुपालन से किसी को कष्ट नही होना चाहिए। यही धर्म की सबसे बड़ी पहचान है कि आप अगर धर्म का पालन कर रहे हैं तो आपसे किसी को कष्ट नही होगा इस बात का ध्यान रखते हुए जब अपने चाहे वह गृहस्थ जीवन हो, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन हो। जब हम इसका आचरण करेंगे और इस बात का सदैव ध्यान रखेंगे कि हमारे इस आचरण से किसी को कष्ट न होगा तो फिर वह अपने धर्म का पालन बहुत अच्छी तरह से कर लेगा। जहाँ तक आपने अन्य सम्प्रदाओं की बात की, अन्य धर्मों की बात की वहाँ धर्म में इतनी उदारता नही हैं जितना की सनातन धर्म में है। उनके यहाँ थोड़ी सी कट्टरता जिसकों हम कह ले वह है क्योंकि सब कुछ छोड़करके वे धर्म के लिए थोड़ी देर जरूर समय निकालेंगे। वस्तुतः अपने यहाँ भी, अपने सनातन धर्म में भी और हिन्दूओं में भी ये बात BEGTNNERS (विगर्नस) के लिए कही जाती है जो बहुत BEGINNING में है कि भाई ठीक है सबकुछ छोड़करके थोड़ी देर तुम इस कार्य को करो। लेकिन जो सामजंस्य बना करके चलते हैं। क्योंकि किसी भी प्राणी का उपकार भी तो धर्म है, किसी भी व्यक्ति की मदद करना भी

तो धर्म हैं कोई व्यक्ति किसी आपदा में फँसा हुआ हो और आपके पूजा का वही समय है तो आप यह कहे कि तुम आपदा में फसे रहे हम थोड़ी देर पूजा करके फिर आते हैं तो क्या आपने धर्म का पालन किया? नहीं किया क्योंकि सबसे पहले प्राणियों की रक्षा, प्राणियों के प्रति सद्भावना रखता ही धर्म है।

राहुल चन्द्रा- इसमें सवाल जैसे हमने काफी आज मन्दिर भी है अमेरिका में भारत में भी काफी बड़े–बड़े हिन्दू मन्दिर है। उनमें जो MANAGEMENT COMMITTEE होती है उनमें काफी मुश्किल होता है युवा वर्ग को COMMITTEE में लाना ORGINIZAITION OPPATION में लाना क्योंकि जो हिन्दू युवा वर्ग है उसको वह भावना और जो जज्बा है धर्म के लिए आने में समय लगता है आपका क्या एक कोई टूल (Tool) है जैसे उपाय जिससे कि हिन्दू जो युवा वर्ग है उसमें वह भावना आये और हिन्दू सामाजिक, राजनीतिक संगटनों में वो जुड़े। आपने गृहस्थ जीवन के साथ भी अपने ब्रह्मचर्य जीवन के साथ भी और उसके साथी भी वे जुड़ सकते है।

डॉ0 रामसेवक दुबे - हाँ उसका एक ही उपाय है हमारे शिक्षाविदों को ये चाहिए कि आरम्भ से ही PRIMARY EDUCARION से ले करके HIGER EDUCATION तक इस प्रकार की शिक्षा को एक अनिवार्य अंग बना दे, चाहे वह विज्ञान पढ़ रहा हो चाहे TECHTNOLOGY पढ़ रहा हो, चाहे SCINENCE पढ़ रहा हो, चाहे किसी भी आयाम में वह अध्ययनरत हों क्योंकि कई बार ऐसा देखा जाता है कि उसे धर्म के महत्व का पता ही नही है। उसे कैसे धर्म का पालन किया जाय कर्मयोग और भक्तियोग क्या है इसके बारे में वह समझता ही नहीं। वह यह सोचता है कि ये तो उन लोगों के लिए है जिनको और कोई काम नही है। तो वह उसे उससे परिचित ही नही है। जैसे उसे अपने SUBJECT का ज्ञान कराया जाता है उसी तरह से हमारे शिक्षा विदों को ये चाहिए कि विद्याार्थियों के पाठ्यक्रम में कम से कम INTER LEVEL SECITION तक तो जरूर इस बात का निर्धारण करे कि उसे धर्म का, कर्म का और अपने अधिकार और कर्त्तव्य का, अपने द्वारा किये जा रहे है बड़ों के प्रति उसका क्या कर्त्तव्य है। इसका ज्ञान कराया जाय तो इस मामले में किसी भी प्रकार की कठिनाई नही आयेगी। और वह अपने आप वह युवक जानता रहेगा कि मुझो क्या करना चाहिए, क्या नही करना चाहिए। मुझो लगता है कि इसका एक ही उपाय है। बल पूर्वक किसी को धर्म में प्रविष्ट नही कराया जा सकता, क्योंकि आप बल पूर्वक धर्म में प्रविष्ट करा रहे है तो एक दिन वह क्रान्ति करता हैं। भागता है और धर्म को समझे बिना धर्म को करते–करते अधर्म करने लगता है। इसलिए शिक्षा में इस बात को ले आना चाहिए।

राहुल चन्द्रा- शिक्षा में जैसे कि हमने काफी C.B.S.E MISSIONARY SCHOOL में काफी और स्कूलो में भी देखा है कि MORAL EDUCATION होता है BUT उसमें एक SUBJECT होता है sanskrit भी एक subject होता है, BUT MORAL EDUCATION जो SUBJECT है एसमें हिन्दू धर्म के PURSPECTIVE से MORAL EDUCATION नही हैं।

डॉ0 रामसेवक दुबे - इस बात को मैं बिल्कुल साफ तौर से यह कहता हूँ कि जो रखे गये है पाठ्यक्रम में वे

पूर्ण नहीं हैं और उनको पढ़ाने के लिए उस विषय के विशेषज्ञों की नियुक्तियाँ नहीं की गयी हैं। किसी अन्य विषय के अध्यापक से उसको पढ़वा दिया जाता है। और वह भी केवल फर्जदारी ही करता है। अगर इस विषय के विशेषज्ञो को नियुक्त किया जाय तो जो कि धर्मशास्त्र के आचारशास्त्र के ज्ञाता हैं। तो फिर वे अच्छी तरह से विद्याार्थी को पढ़ायेंगे उनको समझायेंगे और उनके मन में उस बात को बैठा देंगे और जब एक बार व्यक्ति के मन में कोई बात बैठ जाती है तो वह वहाँ धीरे–धीरे घर कर जाती है, मजबूती से स्थापित हो जाती है। फिर उसको अपने आप अपने कर्त्तव्यों के प्रति लगाव हो जाता है। उसे धर्म के प्रति अनुराग होता है। और फिर उसमें बल लगाने की कोई आवश्यकता नही रह जाती, क्योंकि हर प्राणी अपने परम अवाप्तव्य को प्राप्त करना चाहता है।

राहुल चन्द्रा- तो जैसा कि हमें प्रोफेसर दुबे जी ने बताया कि आपने कि PRIMARY SECONDARY SENIOY SECONDARY में एक MORAL EDUCATION जो कि हिन्दू PURSPECTIVE हिन्दू धर्म के नजरिये से उसको अगर शुरू से पढ़ायी जाय तो हमारे युवा वर्ग को जब बड़े होंगे तो उस समय वे हिन्दू सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संगठनों में वह उस भावना को समझेंगे और उसमें वो अपने आप को जुडेंगे, उसको सशक्ति करण करेंगे जो कि एक OVERALL हिन्दू समाज के लिए अलग–अलग AREAS में WORK करने हैं।

आपसे एक और जैसे कि नये सरकार आये हैं माननीय श्री प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के अध्यख्ता में और उसमें संस्कृत हिन्दू HERITAGE एक PILLER है उनके एक PHILOSHPY का U.P MENTESION एजेण्डा का उसमें हमने देखा कि SANSKRIT HERITAGE WEEK भी सब जगह बनाया जायेगा। और अब ये भी बात उठा है कि श्रीमद्भगवद्गीता को COMPULSARY किया जाय। भारतीय स्कूलों में C.B.S.E. NON C.B.S.E में उसके बारे में आपकी क्या OPINTION हैं।

डॉ0 रामसेवक दुबे -यह विचार तो मैने अभी अखबारों में पढ़ा था कि प्रधानमंत्री जी की यह इच्छा है और सी0बी0एस0ई0 बोर्ड में भी इण्टरमीडिएट तक संस्कृत पढ़ाये जाने की सूचनाओं को भी पढ़ा था। भगवद्गीता को अनिवार्य करना तो बहुत अच्छा है। लेकिन उस अनिवार्य किये गये विषय को कौन पढ़ायेगा। जब तक उसको ठीक से समझा हुआ व्यक्ति नहीं पढ़ायेगा तब तक वह किताबों में बन्द पड़ा रह जायेगा और कोई न समझ पायेगा। और न ही समझा पायेगा। इसीलिए पाठ्यक्रम में भगवद्गीता का या इस तरह के आचार शास्त्रों को निर्धारित करना बहुत अच्छी बात है, बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन उससे ज्यादा महत्वपूर्ण ये है कि उनको पढ़ाने के लिए उस विषय के विशेषज्ञों को वहाँ रखा भी जाय। जिससे कि विद्यार्थी को वह अपने इस शास्त्र के प्रति आकृत कर सके उसके मन में उस बात को बैठा सके। उस सिद्धान्त को समझा सके और इतनी मजबूती से समझा दे कि फिर वह किसी अन्य के द्वारा भी मार्गभ्रष्ट न किया जा सके। कोई उसे बर्गला न सके और कभी वह अपने उस विषय से हट न सके। तो यह उपयोगी होगा अन्यथा यह केवल एक राजनीतिक उपक्रम बनकरके

रह जायेगा।

राहुल चन्द्रा- जी हमनें देखा है कि काफी सारे स्कुलो में हमने भी बचपन में संस्कृत PRIMARY और SECONDARY में 8 वीं कक्षा तक पढ़ी और काफी सारे बच्चे पढ़ते है। संस्कृत तो उसको एक पास करने के लिहाज से देखते है कि उसमें हम पास हो जायें और उसके बाद 8वीं कक्षा के बाद संस्कृत भूल जाते हैं जो उन्होंने पढ़ा होता है। ये क्यों हो रहा है।

डॉ0 रामसेवक दुबे - उसका कारण यही है कि उनके मन में उसके प्रति रूचि उत्पन्न हुई ही नही, अगर उसके प्रगति उस बच्चे के मन में रूचि उत्पन्न हुई होती तो फिर वह उसको छोड़करके भागने की चेष्टा न करता। और दूसरी एक और बात है कि संस्कृत को शिक्षा के साथ–साथ उसको नौकरियों से भी जोड़ा जाय। कभी–कभी संस्कृत पढ़ करके कोई आया है। तो उसको हटाओं यह व्यक्ति कोई काम नही कर पायेगा, इस तरह की धारणायें भी समाज में व्याप्त है, अधिकारियों में व्याप्त हैं। तो उस संस्कृत को तब तक कि समाज की अन्य गतिविधियों से नही जोड़ा जायेगा, तब तक कोई विद्यार्थी उसको क्यो पढ़ेगा, और जब नही पढ़ने पायेगा, नौकरी नही पायेगा उसके बल पर तो उसे जल्दी से छोड़कर के उन विषयों की ओर भागना चाहेगा। जिसके आधार पर उसको नौकरी मिलने की बड़ी संभावना है। भले वह उस विषय को पढ़ करके नौकरी नही पा रहा है लेकिन उसके मन में यह रहता ही है कि हम बहुत जल्दी DOCTOR बन जायेंगे ENGINEER बन जायेंगे तब हमें नौकरी मिल जायेगी तो ठीक है DOCTOR, ENGINEER भी बने वह परन्तु अगर इन शास्त्रों को उसको पढ़ाया जाय जो M.B.B.S. का COURSE है। हफ्ते में एक ही दिन का COURSE रखा जाय। कम से कम उसे भगवद्गीता के कुछ श्लोकोंको हफ्ते में एक ही दिन कोई विशेषज्ञ जो करके पढ़ा दे। जो ENGINEERS हैं उनके पाठ्यक्रम में भी कुछ इस तरह का रखा जाय तो उसके मन में वह बाते जमती रहेंगी और फिर धीरे–धीरे वही उसकी बलवती इच्छा बनेगी। उसको फिर बलपूर्वक धर्म में और धार्मिक संगठनों में भी नही लाना पडेगा। क्योंकि हर व्यक्ति अपने कल्याण की कामना करता है, हर व्यक्ति भगवान् से छरता है, हर व्यक्ति की आस्था भगवान् में है। नास्तिकों में भी भगवान् के प्रति आस्था है मै इस बात को कहता हूँ कईबार कोई नास्तिक भी है तो अभी नास्तिक क्यों है। इसलिए कि दूसरे पक्ष में वह भगवान् की सत्ता को मानता है तभी तो नास्तिक है अगर वह भगवान् की सत्ता को न मानता तो नास्तिक किससे होता।

इसलिए सबको भगवान् के प्रति आस्था है अपने कल्याण के प्रति सब बड़े जागरूक हैं। बस आरम्भ से लेकर के युवा वर्ग तक उनको सारे पाठ्यक्रमों में अपनी भारतीय संस्कृति के प्रति, भारतीय शास्त्रों के प्रति जो हमारे नैतिक कर्त्तव्य है उनके प्रति एक पाठ्यक्रम जरूर रखा जाय, उसको पढ़ाने वाले योग्य व्यक्ति हो और वह समझा सके उसको, तब हमें इस प्रकार के कठिनाईयों का अनुभव नहीं होगा। अगर ऐसा नही हुआ तो धीरे–धीरे

धर्म हिन्दू धर्म जिसे आप कह रहे हैं उसकी यही दशा देखने को मिलेगी।

राहुल चन्द्रा- जैसा कि प्रोफेसर दुबे जी ने कहा है कि संस्कृत भाषा को EMPOWERMENT शक्तिशाली करने के लिए जो एक वैदिक भाषा है। और जिससे भारत की सारी भाषायें निकली हैं और VEDAS को और जो हमारे SECRET पवित्र TEXT हैं। उनको समझने के लिए भी संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है उसके शक्ति करने के लिए भारत में जो EDUCATION INSTITUTION हैं। भले वो SCIENCE TECHNOLOGY MEDICINES उसमें भाषा का एक ऐसा COURSE रखा जाय MATERIAL PROGRAME धर्म HERITAGE, TREDITION, SCREPTURE जो है उसमें वो FACULTY हो। और एक तरह का जिसमें MATERRY COURSE हो जिसमें AUTOMATICALLY संस्कृति LANGUAGE के जो FACULTIES है उनको REQUIREMENT ALL OVER बढ़ेगा। और उससे लोगों में संस्कृत भाषा को समझने में रूचि रहेगी क्योंकि वह EMPLOYMENT देगा और एक CARRER OPPORTUAITY देगा। और यही एक LONG TURMSUNSTAINABLE तरीका है। संस्कृत भाषा जो है हिन्दू धर्म सनातन हिन्दू धर्म वैदिक जो हमारा CIVILIZATION है उसको SUSTAIN PROTECT PRESERVE करके रखने का हमारा ये विश्वास है कि ये जो आवाज है जो आपने आज हमें ज्ञान दिया है। और आपसे बात हुआ है वह हमारे जो HUMAN RESOURCE EDUCATION DEPARTMENT हैं उन तक पहूँचे। और जैसा कि आपने कहा कि WEEKELY HERITAGE CELEBRATION से वह एक लम्बा– SOLUTION ही है। एक लम्बा SOLUTION है संस्कृत को INSTITUTIONAL करना हर संस्था हर N.G.O. प्रौद्योगिकी में उसको एक COMPULSARY SABJECT और उसी में ही एक COURSE MATERIAL, DEVELOPMENT जो कि FOR MORAL SCIENCE WITH THE HINDU PROSPECTED

डॉ0 रामसेवक दुबे - बिल्कुल, यही दोनों तरह से लाभदायक हैं। इससे हमारा देश जो है उसका भविष्य कल्याणमय होगा और सारे युवक आस्थावान होंगे , कर्त्तव्य के प्रति उनमें जागरूकता बढ़ेगी। और उन्हें सफलता मिलेगी मैं तो यहाँ इस MAHARSHT UNIVERSITY OF MANAGMENT के इस SEMINAR में आ करके मैने यह देखा कि विदेशियों के मन में जिस प्रकार की धारणा हमारे शास्त्रों के प्रति उठी है। जिस तरह से उनके मन में एक बड़ी प्रबल जिज्ञासा उठी है।, भगवद्गीता का क्या संदेश है, यज्ञ क्या हैं। उसको देखकरके मुझे बड़ा उत्साह हुआ। जब विदेशियों के मन में इस प्रकार की भावना है तो भारतीयों के मन में उनके तो रक्त में ही यह धारणा बसी हुई है केवल उसे जगाने की बात है। और उसको जगाने के लिए हमारे जो सरकारी संसाधन है जो भी प्रभावी उपक्रम है अगर वह किये जाते हैं तो फिर हमें इस मार्ग में नितान्त सफलता मिलेगी। मुझको यह पूर्ण विश्वास है।

राहुल चन्द्रा- धन्यवाद रामसेवक दुबे जी आज आप यहाँ MAHARSHT UNIVERSITY में WORLD ASSOCIATION FOR VEDIC STUDIES के CONFERENCE 2014 में आप है और आपने यहाँ पर सबके PAPER RESEARCH

PRESENTATION देखा आपका क्या MESSAGE है। हमारे जो AUDIENCE है। बाकी हिन्दू समाज है और बाकी जो हमारे समाज के प्रति मित्र है जो कि इस संस्था जो वेद है उसको सशक्ति करण कर सके। और MAHARSHT UNIVERSITY के जो MESSAGE है हिन्दू धर्म का VVEDIC TRANSEENDENTAL MEDITATION के लिए क्या आपका MESSAGE है।

डॉ0 रामसेवक दुबे - वैदिक STUDIES में जिस प्रकार से मैने यहाँ देखा विद्वानों का लगाव और उत्साह अगर इसी गति से हम लोग काम करते रहे तो निश्चित ही वैदिक साहित्य से मानव कल्याण के लिए बहुत सारे विषयों को निकाल करके प्रस्तुत किया जा सकेगा। जो कि देश ही नही पूरे विश्वके कल्याण के लिए बड़ा उपयोगी होगा। इस दिशा में WORLD ASSOCIATION FOR VEDIC STUDIES की बड़ी भूमिका है और मुझे तो यह लगता है कि यह बहुत ही एक अच्छा उपक्रम है। इस प्रकार के सम्मेलन पूरे विश्व में स्थान–स्थान पर होने चाहिये। ये जगत् कल्याण के लिए बहुत उपयोगी कदम है और मैं इस बात का आह्वान करता हूँ कि अगर इस प्रकार के कार्यक्रम होते रहते हैं तो वेदों में जगत् कल्याण के लिए जो भी तत्त्व निहित हैं। उनका हम दोहन करके प्रणियों के सामने रखेंगे। और इससे जगत् का कल्याण होगा।

राहुल चन्द्रा- बहुत–बहुत धन्यवाद रामसेवक दुबे जी जो इलाहाबाद विश्व विद्यालय में संस्कृत विभाग में प्रोफेसर है। आप विश्व हिन्दू समाचार के HINDU TALK SHOW पर आयें और आपने मूल्य ज्ञान दिया। कर्मयोग भक्तियोग आज का जो युवा वर्ग है उसके लिए क्या मार्ग है साथ में आपने जैसा कि बताया कि संस्कृत जो हमारी वैदिक भाषा है उसके PROTECTION SUSTANING,और PRESERVENCE के लिए क्या–क्या सरकार STEP उठा सकती है। इससे हमारे धर्म को और हमारे दर्शको को ज्ञान मिला है। और उसका आपके आभारी है। बहु–बहुत धन्यवाद् नमस्कार

डॉ0 रामसेवक दुबे - नमस्कार – बहुत धन्यवाद

परिचर्चा / लेखक

डॉ0 रामसेवक दुबे

उपाचार्य

संस्कृत विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद